एक आर्थिक अनेक प्रकार के समुदाय बनाता है और मनुष्य के बहुमुखी विकास के लिए यह आवश्यक है कि मानव जीवन के विविध पहलुओं से सम्बन्धित समुदायों को राज्य एवं अन्य समुदायों के हस्तक्षेप से स्वतंत्र रहकर कार्य करने का अवसर मिलना चाहिए। लास्की के ही शब्दों में "आवश्यकताओं की दृष्टि से पूर्ण होने के लिए सामाजिक संगठन के ढाँचे का स्वरूप संघीय होना चाहिए। उसका यह भी कहना है कि सत्ता के केन्द्रों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए और रक्षा करने के लिए स्थानिक तथा व्यवसायिक ~~समुदायिक~~ समुदायों को शक्ति प्रदान की जानी चाहिए।

संप्रभुता की परम्परागत धारणा का निराकरण लास्की ने जिन विचारों के द्वारा प्रतिपादन किया है उसमें यद्यपि पर्याप्त बल है, फिर भी अनेक आधारों पर उनकी आलोचना भी की जा सकती है।

सर्वप्रथम लॉस्की एक ऐसी बात की आलोचना करता है जो सम्प्रभुता के प्रतिपादक कहते ही नहीं है। ऑस्टिन और सम्प्रभुता की परम्परागत धारणा के अन्य प्रतिपादकों के अनुसार राज्य कानूनी रूप से ~~संप्रभु~~ है सर्वोपरि है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि राज्य की कोई नैतिक अथवा मौलिक सीमाएँ नहीं होती है। दूसरा, लास्की भी अन्य बहुलवादियों के अनुसार राज्य और सरकार को एक समझने की भूल करता है

ऑस्टिन और उसके साथी विश्लेषणवादी न्यायविदों ने सरकार की संप्रभुता नहीं बल्कि राज्य के संप्रभुता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

लास्की का चिन्तन निरन्तर परिवर्तनशीलता की स्थिति से ग्रस्त रहा है। अपनी प्रारंभिक रचनाओं (Studies in the Problem of Sovereignty और Authority in the Modern State) में वह राज्य की सर्वोच्च सत्ता पर प्रबल प्रहार करते हुए उग्र बहुलवादी विचार-धारा का प्रतिपादन करता है और राज्य को अन्य एच्छिक समुदायों के समान ही एक समुदाय मानता है। लेकिन बाद में अपनी प्रसिद्ध ग्रन्थ 'राजनीति के मूल तत्व (Grammer of Politics) में वह अपने प्रारंभिक उग्र बहुलवाद में कुछ संशोधन करते हुए माना कि राज्य और अन्य एच्छिक समुदायों के स्वरूप में आधारभूत अंतर है। अन्तर यह है कि राज्य के पास बाध्यकारी शक्ति होती है जबकि अन्य समुदायों के पास इस प्रकार की कोई शक्ति नहीं होती। An Introduction to Politics में भी वह प्रारंभिक बहुलवाद से बहुत दूर चला गया है और राजनीति के मूलतत्व के प्रथम संस्करण में प्रतिपादित बहुलवाद के संशोधित रूप को भी तिलांजली दे देता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार लास्की ने अपने ~~प्रारंभिक~~ राजनीतिक चिंतन के ~~प्रारंभिक काल में~~ परिपक्वता काल और उत्तरार्द्ध में अधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण के आधार पर राज्य की सत्ता और व्यक्ति की स्वतंत्रता में सामंजस्य स्थापित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। उसने कहा है कि राज्य को अन्य समुदायों पर नियंत्रण का अधिकार प्राप्त है किन्तु मानव जीवन में इन समुदायों के अस्तित्व और उनकी उपयोगिता को बरकरार रहते हुए राज्य के द्वारा इन समुदायों की गतिविधियों पर कम से कम नियंत्रण ही रखा जाना चाहिए। अन्त में, हम कह सकते हैं कि सत्ता के विकेन्द्रीकरण का विवेकपूर्ण आग्रह लास्की का आधुनिक राजनीतिक चिन्तन को एक विशेष योगदान है।

—— o ——